IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के विशेष संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन तथा समाज और परंपराओं में आधुनिकीकरण

प्रदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
नॉर्थ इंडिया कॉलेज ऑफ हायर एजुकेशन, नजीबाबाद

शोध सार: इस शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य समाजशास्त्री और प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के संघर्षपूर्ण जीवन का एक वर्णनात्मक चित्रण प्रस्तुत करना है। शोधकर्ता उनके द्वारा समाजशास्त्र के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान से अत्यंत प्रभावित हुआ। जिसके फलस्वरूप शोधकर्ता को इस क्षेत्र में अनुसंधान करने की प्रबल इच्छा हुई, जिसके लिए शोधकर्ता ने प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के जीवन पर तथा समाजशास्त्र के क्षेत्र में उनके योगदान पर आधारित विभिन्न पत्रों, रचनाओं इत्यादि का संग्रह किया, जो इस शोध–पत्र से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। इस प्रपत्र में प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के सामाजिक परिवर्तन के संबंध में विभिन्न मतों की व्याख्या की गई है कि एक विकसित समाज के लिए किन आवश्यक अवयवों एवं गुणों का होना अत्यंत आवश्यक है तथा प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के द्वारा समाज व परंपराओं में आधुनिकीकरण के प्रभाव को समझने एवं विकास के लिए जो कार्य किए गए हैं उनकी व्याख्या की गई है। अनुसंधानकर्ता संपूर्ण अध्ययन के पश्चात इस निष्कर्ष पर आता है कि सामाजिक परिवर्तन एक विकसित समाज के लिए नितांत आवश्यक है, जिससे एक नवीन समाज की स्थापना की जा सकती है।

मूलशब्द: सामाजिक परिवर्तन, आधुनिकीकरण, समाजशास्त्र, समाज और परंपराओं

प्रस्तावना

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के समाजशास्त्री और प्रोफेसर एमेरिटस योगेंद्र सिंह का पिछले साल मई में निधन हो गया। प्रोफेसर योगेंद्र सिंह का निधन न केवल समाजशास्त्र बंधुत्व के लिए, अपितु भारत में महत्वपूर्ण अध्ययन की परंपरा के दृष्टिकोण से भी छात्र हित के लिए यह एक क्षति है। लेख सामाज, योगेंद्र सिंह को याद करता है और एक शिक्षक, एक अकादमिक और एक संस्था निर्माता के रूप में उनके करियर को दर्शाता है। योगेंद्र सिंह न केवल जेएनयू में प्रोफेसर थे, बल्कि उन्होंने 1960 के दशक के अंत में जेएनयू के स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज को संभव बनाने में अपने सहयोगियों को सहयोग किया। उनके समाजशास्त्र ने उन्हें अपने वर्णनात्मक वंश की आलोचना करना सिखाया। उत्तर प्रदेश में एक जमींदार परिवार में पैदा होने के बावजूद, योगेंद्र सिंह ने जाति, पदानुक्रम और विशेषाधिकारों को अपने आलोचनात्मक विश्लेषण का विषय बनाया। यह प्रपत्र समाजशास्त्र में प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के योगदान और भारतीय समाज के विभिन्न क्षेत्रों, विशेष रूप से, भारत में भारतीय परंपरा, जाति, वर्ग और पदानुक्रम के आधुनिकीकरण को देखता है। उन्हें भारतीय समाजशास्त्र की ऐतिहासिक जड़ों और विज्ञान और महत्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थानों पर उनके कार्यों के लिए भी याद किया जाता है।

प्रोफेसर योगेंद्र सिंह का जन्म 2 नवंबर 1932 में, उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में हुआ, जो जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोशल सिस्टम के संस्थापक एवं प्रोफेसर एमेरिटस रहे तथा 1967–68 में स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी यूएसए में फुलब्राइट फैलोशिप पर गए। प्रोफेसर योगेंद्र सिंह भारतीय समाजशास्त्र समाज के अध्यक्ष रहे तथा मध्य प्रदेश सरकार के सर्वश्रेष्ठ समाजिक वैज्ञानिक पुरस्कार के अलावा 2007 में इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किए गए। प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के समाजशास्त्र का प्रारंभ गांव की पीली सरसों की खेती एवं गांव में सावन की पहली फुहार से उठती हुई सोंधी–सोंधी महक में हुआ। उस समय छोटे कुटीर उद्योग के नष्ट होते दृश्य एवं गांव के जमीदारों द्वारा लगाए जाने वाले विभिन्न करो के कारण समाज में व्याप्त होती गरीबी ने, प्रोफेसर योगेंद्र सिंह में समाज को निकट से समझने की ललक पैदा की, क्योंकि वह स्वयं इसी सामाजिक संरचना के हिस्सा थे। तत्पश्चात गांव से पलायन के उपरांत शहर पहुंचने पर उनका ध्यान यहां पर बसे रिक्शा चलाने वाले व्यक्तियों के अपने भूख मिटाने के तरीके पर पड़ा। इससे उन व्यक्तियों की आय में तो इजाफा हुआ किंतु उनकी आयु घटती चली गई। इस घटना ने प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के समाजशास्त्र की समझ को और अधिक मजबूत किया। कुछ समय के अंतराल के बाद, प्रोफेसर योगेंद्र सिंह लखनऊ विश्वविद्यालय चले गए, जहां पर उनका सामना सामाजिक मूल्यों पर आधारित नवीन समाज से हुआ तथा उनको राधाकमल मुखर्जी, डी पी मुखर्जी एवं ए.के. सरन जैसे सामाजिक वैज्ञानिकों का सानिध्य प्राप्त हुआ। वर्ष 1958 में अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र के मिले–जुले ज्ञान को लेकर, प्रोफेसर योगेंद्र सिंह ने, आगरा के इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंस में समाजशास्त्र के अध्ययन का कार्य प्रारंभ किया एवं वर्ष 1961 में जयपुर एवं जोधपुर में समाजशास्त्र विभाग के प्रमुख के रूप में अध्ययन कार्य में लीन रहे।

सन 1971 में प्रोफेसर योगेंद्र सिंह जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय पहुंचे एवं उनको, समाजशास्त्र को नई दिशा में ले जाने हेतु भारतीय संविधान में प्रदत्त मूल्य समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व एवं सामाजिक न्याय पर आधारित समाजशास्त्र का पाठ्यक्रम बनाने का मौका प्राप्त हुआ। आधुनिकीकरण की नई चुनौतियों से निपटने एवं योजनाबद्ध विकास की चुनौतियों का सामना करने के लिए एवं समाजशास्त्र को और मजबूत एवं प्रतिनिधित्वकारी विभाग बनाने के लिए उन्होंने मजबूती से कार्य किया। जिसमें भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक भिन्नताओं का समावेश किया जा सके एवं जेएनयू के समाजशास्त्र विभाग को वैश्विक समाजशास्त्र से जोड़ने की चुनौतियों का सामना करते हुए, प्रोफेसर योगेंद्र सिंह ने एक ऐसे समाजशास्त्र विभाग की स्थापना में अपना योगदान दिया, जिसमें लिंग, प्रांत, धर्म, जाति आदि का प्रतिनिधित्व दिखाई दे और उसे राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय चुनौतीयों से जोड़ा जा सके। इसके लिए उन्होंने थ्योरी और इम्पीरियल रिसर्च तथा अमेरिकन मॉडल में टलकॉट पार्सस मॉडल पर कार्य किया। इसी समय देश में विभिन्न मांगों को लेकर आंदोलनों की लहर उठने लगी, जिसने प्रोफेसर योगेंद्र सिंह का ध्यान अपनी ओर खींचा और उन्होंने जाति को समझने के लिए उसे संरचना और सांस्कृतिक अवधारणाओं में विभक्त किया। उनका हमेशा यही मानना था कि जाति भारतीय समाज की विशिष्ट संस्था है और अगर समाजशास्त्री यह मान लेंगे तो इसको और अच्छी तरह समझ सकेंगे। जिससे विश्व युगीन ज्ञान का आदान–प्रदान सुचारू रूप से किया जा सके। प्रोफेसर योगेंद्र सिंह ने जोर देकर सदैव इस बात की वकालत की, कि यदि समाजशास्त्र को व्यापक स्तर पर स्थापित करना है तो, इसे पठन–पाठन एवं शोध के अतिरिक्त अनुशासन की सहयोगी संस्थाओं को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। इसी दृष्टिकोण के कारण शायद उन्होंने अत्यंत व्यस्त होने के उपरांत भी सोशियोलॉजिकल सोसाइटी के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभाला तथा उसके जनरल *सोशियोलॉजिकल बुलेटिन* में लगातार लेखों को प्रकाशित करवाते रहें। समाजशास्त्र का यह प्रकाश स्तंभ 10 मई 2020 को सदैव के लिए पंचतत्व में विलीन हो गया।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य प्रोफेसर योगेन्द्र सिंह के द्वारा सामाजिक परिवर्तन और परंपराओं में आधुनिकीकरण के प्रभाव के बारे में उनके विचारों और अवधारणाओं का वर्णन करने के लिए गुणात्मक स्तर के माध्यम से माध्यमिक प्रदत का विश्लेषण करना है। जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इस अध्ययन के उद्देश्य को पूरा करने से संबंधित हैं और निम्नानुसार सूचीबद्ध हैं:

- सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा को परिभाषित करना
- आधुनिकीकरण की अवधारणा को परिभाषित करना
- समाज और परंपराओं में आधुनिकीकरण के प्रभावों का वर्णन करने के लिए
- प्रोफेसर योगेंद्र सिंह का परिचय और समाजशास्त्र के प्रति उनका विचारा को उजागर करना

समाज व परंपराओं में आधुनिकीकरण का प्रभाव

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय समाज व परंपराओं में व्यापक स्तर पर परिवर्तन हुए, जिसे समझने के लिए एक सैद्धांतिक उपागम की आवश्यकता थी। प्रोफ़ेसर योगेंद्र सिंह के अनुसार कोई भी सिद्धांत तब तक वृद्धि नहीं कर सकता, जब तक इसकी आंतरिक बुनियाद सुदृढ़ ना हो, जो बृहत से लेकर सूक्ष्म स्तर तक किसी भी सामाजिक परिवर्तन को समझा सके। सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव को समझने के लिए निश्चित अवधारणाओं के साथ उनकी ऐतिहासिकता को भी जानना नितांत आवश्यक होता है। भारतीय परंपराओं व समाज पर आधुनिकता के प्रभाव स्वरूप उत्पादन सामाजिक परिवर्तन को, निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है–––

- प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के अनुसार भारतीय समाज की परंपरा का आधुनिकीकरण मुख्य रूप से ब्रिटिश शासन के पश्चिमी संपर्क का परिणाम रहा है, जिसके फलस्वरुप यहां की संस्कृति एवं संरचना में परिवर्तन हुए। इसके बाद भी यह ध्यान रखना आवश्यक है, कि पश्चिमी संपर्क से उत्पन्न सभी परिवर्तनों को आधुनिकीकरण नहीं कहा जा सकता है।
- पश्चिमी परंपरा के संपर्क के परिणाम स्वरूप भारतीय समाजों में, औद्योगिक क्रांति एवं सामाजिक पुनर्जागरण के प्रभाव वश अनेक व्यापारियों, मध्यस्थों और उद्योगपति का ऐसा समूह तैयार हो गया, जिसने पश्चिमी सभ्यताओं को अपनाना प्रारंभ कर दिया। फलस्वरुप ऐसे संप्रदायों का जन्म हुआ, जिसने हिंदू परंपराओं से संबंधित पलायनवाद अथवा सन्यास से उत्पन्न होने वाले निराशावाद का विरोध किया। जिससे भारत की वृहद परंपरा जैसे मानवतावाद, सांस्कृतिक कर्तव्य की पूर्ति तथा समानता के सिद्धांत का उद्भव होने लगा।
- आधुनिकीकरण के व्यवहार के अतिरिक्त, भारतीय समाज के संरचनात्मक औद्योगिकरण की प्रक्रिया का भी आरंभ हुआ। जिसके तर्ज पर आधारित प्रशासनिक अथवा न्याय व्यवस्था, सैन्य संगठन, औद्योगिक अधिकारी तंत्र, आर्थिक अभिजन वर्ग आदि नई व्यवस्थाओं में नये वर्गों के फलस्वरूप भारतीय समाज की संरचना में अनेक परिवर्तन हुए। प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के अनुसार भारत में औद्योगीकरण के फलस्वरुप यहां एक नई औद्योगिक श्रमिक वर्ग तथा श्रमिक संगठनों का प्रादुर्भाव हुआ, जिन की प्रकृति लगभग पूरे भारत में एक जैसी देखने को मिलती है।
- पश्चिमी प्रभाव में भारतीय समाज के संरचनात्मक परिवर्तन के फलस्वरुप राष्ट्रवादी नेतृत्व का विकास हुआ। प्रारंभ में यह राष्ट्रवाद केवल संभ्रांत वर्ग एवं नगरों तक सीमित रहा, किंतु बीसवीं शताब्दी में नई चुनाव पद्धति के उद्भव स्वरूप ग्राम स्वराज की स्थापना एवं जाति संबंधित उन्मूलन पर जोर दिया जाने लगा।
- भारतीय समाज के परिवर्तन का एक रूप यहां की राजनीतिक संस्कृति में देखने को मिला, व्यस्क मताधिकार पर लोकतांत्रिक व्यवस्था द्वारा प्रत्येक पक्ष का राजनीतिकरण संभव हो पाया, जिसके परिणाम स्वरूप आज हिंदू विवाह एवं उत्तराधिकार से संबंधित अनेक सुधार किए गए, जिसमें परंपरागत हिंदू पारिवारिक संस्कृति में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले।

- स्वतंत्रता के पश्चात, भारतीय ग्रामीण जीवन की भूमिका संरचना में भी मुख्य परिवर्तन देखने को मिले। सामुदायिक विकास योजनाओं के माध्यम से, ग्रामीण जीवन में विकास पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा तथा जमीदारी व्यवस्था के उन्मूलन पर नई भूमि सुधार नियमों को लागू किया गया, जिससे व्याप्त असमानताओं को कम किया जा सके, साथ ही ग्राम पंचायतों की स्थापना की गयी जिससे ग्रामीण समाज में शक्ति संरचना में सभी की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित की जा सके।
- भारतीय परंपरा की मुख्य विशेषता जाति संस्तरण है। प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के अनुसार स्वतंत्रता उपरांत जातिगत भूमिका में व्यापक परिवर्तन हुए, जाति परंपरा में अन्य जातियों के आपसी संबंधों में सहयोग की भावना में वृद्धि हुई, यह वृद्धि आधुनिकीकरण, नगरीकरण एवं परिवहन के साधनों में वृद्धि स्वरूप संभव हो सके। विभिन्न जातियों की आर्थिक दशा में उन्नति के कारण एक नई व्यवस्था का विकास हुआ।
- शिक्षा के माध्यम से जागरूकता एवं तार्किकता उत्पन्न हुई, जिसने विभिन्न जातियों को एक दूसरे के साथ जोड़ने में अहम योगदान दिया तथा सहयोगी संबंधों के निर्माण एवं प्रोत्साहन को मजबूती प्रदान की। प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के अनुसार, आधुनिकीकरण के प्रभाव को भारतीय परंपरागत मूल्यों में परिवर्तन के प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।
- भारतीय समाज की एक मुख्य विशेषता परंपरागत मूल्यों से संबंधित रही है, जिसमें ऐसे नियमों का चलन रहा, जो सामाजिक संस्तरण को बनाए रखें जैसे वर्ण विभाजन, जाति व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, पुरुषार्थ एवं कर्म का सिद्धांत आदि, इसी प्रकार के नियम थे, जिनका मुख्य कार्य सामाजिक संस्तरण को बनाए रखना था। वर्तमान समाज में सामाजिक संस्था के स्थान पर समानता, बंधुता, धर्म, स्वतंत्रता व समानता आदि मूल्यों के प्रभाव में बढ़ोतरी के फलस्वरूप धार्मिक अंधविश्वासों के स्थान पर तार्किक एवं धर्मनिरपेक्षयी मूल्यों का प्रभाव बढ़ने लगा है। जिससे दुर्बल वर्ग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने लगे है। यह सभी परिवर्तन भारतीय समाज के आधुनिकीकरण की ही देन है।

सामाजिक परिवर्तन पर योगेंद्र सिंह के विचार

स्वतंत्रता पश्चात, भारतीय समाज में तीव्र गति से परिवर्तन हुए। प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के अनुसार, यह परिवर्तन मुख्यता संस्कृति, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्रों में हुए हैं। जिसके फलस्वरुप भारतीय संविधान में समानता, बंधुत्व, धर्मनिरपेक्षता और सहअस्तित्व के सिद्धांत को अपनाकर प्रजातांत्रिक मूल्यों के आधार पर एक नए भारतीय समाज का उदय हुआ। इस समाज का उद्देश्यें सामाजिक असमानता को दूर कर राष्ट्र निर्माण में सभी जातियों, वर्गों, धर्मो के लोगों की भागीदारी को स्थापित करना था।

प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के अनुसार, गांव तथा शहर में परिवर्तन स्वरूप आधुनिक औद्योगिक समाज में मध्यवर्ग एक सशक्त वर्ग के रूप में उभरा, जो अपने समूह के हितों के प्रति ज्यादा संगठित थे। सामान्यवादी सम्राज्य के पतन के बाद पूंजीवादी नामक साम्राज्य का उदय हुआ, जिसनें व्यक्ति के जीवन स्तर में सुधार, आर्थिक सशक्ता, शिक्षा का प्रचार–प्रसार और यातायात के संसाधनों का सार्वभौमिकरण आदि किया। इसके बाद भी मध्यम वर्ग व निम्न वर्ग की विचारधारा में व्यापक अंतर देखने को मिलता है क्योंकि मध्यम वर्ग के लोग पूंजीवाद को बचाना चाहते हैं, जबकि निम्न वर्ग आर्थिक व सामाजिक बुनियादी व्यवस्था के पक्षधर हैं।

भारत की औद्योगिक नीति मिश्रित आर्थिक व्यवस्था है, जिसमें निजी उद्योग व सार्वजनिक उद्योग मिलकर राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देते हैं। निजी क्षेत्र ने पूंजीवाद को तथा सरकारी क्षेत्र ने समाजवाद को जन्म दिया। जनता व सरकार की नीतियों के परिणाम स्वरूप सामाजिक परिवर्तन की गति तीव्र हुई हैं। शिक्षा का आधुनिकरण तथा वैज्ञानिक शिक्षा का विकास हुआ, जिस कारण अनेक विरोधाभास उत्पन्न हुए, इन विरोधभासो ने हीं आंदोलन एवं संघर्ष को जन्म दिया जैसे श्रमिक आंदोलन, जाति आंदोलन आदि, जिसका समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। प्रोफेसर योगेंद्र सिंह का मत है, कि हमें एक ऐसी नवीन समाज को विकसित करना चाहिए, जिसमें वैज्ञानिकता के साथ धार्मिक भावनाओ और मान्यताओं को भी वैधानिकता प्राप्त हो। हमें क्रांतिकारी मूल्यों की स्थापना, समाजवादी विचारों पर करनी होगी, जिसके लिए हमें लोकतंत्रात्मक प्रणाली का सहारा लेना होगा।

आजादी के बाद सामंतवादी जमीदारों व जागीरदारी प्रथा को समाप्त कर दिया गया। किंतु आज भी कुछ वर्गो में अभी भी इस प्रकार की मानसिकता पाई जाती है, जो आज भी मुख्यता ग्रामीण समाज में अपने प्रभुत्व शक्ति को कायम रखने की कोशिश में लगे हुए हैं। इसलिए प्रोफेसर योगेंद्र सिंह ने, दो विरोधी प्रवृत्तियों का जिक्र किया राष्ट्रीयता तथा संप्रदायिकता। जिनका लक्ष्य राष्ट्र निर्माण न करना बल्कि, सत्ता को प्राप्त करना है। यह प्रवृत्ति प्रजातांत्रिक राष्ट्र निर्माण में बाधक है। वह आगे लिखते हैं कि यह राष्ट्र निर्माण के संगठन में बाधा कुछ समय के लिए ही है, वैश्वीकरण एवं उदारीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरुप शीघ्र ही इस स्थिति में परिवर्तन होगा। इस प्रकार, योगेंद्र सिंह की विचार धारा ऐतिहासिक, उद्रविकासिय सिद्धांन्त तथा हीगल के द्वंद्ववाद पर आधारित है।

उपसंहार

संपूर्ण शोधपत्र के अध्ययन के आधार पर प्रो. योगेंद्र सिंह को उन महान समाज शास्त्रियों की श्रेणी में रखा जा सकता है जो अपने संपूर्ण जीवन में समाजशास्त्र के विकास हेतु पूर्ण निष्ठा से कार्यरत रहे तथा जिनका दृष्टिकोण सदैव समाजशास्त्र के विकास पर ही केंद्रित रहा । उन्होंने स्वतंत्रता पूर्व व स्वतंत्रता के पश्चात के समाज में आधुनिकीकरण के कारण उत्पन्न परिवर्तनों की विस्तृत व्याख्या को प्रस्तुत किया। भारतीय समाजशास्त्र को वैश्विक समाजशास्त्र के साथ जोड़ने में ग्लोबल स्टडीज प्रोग्राम की स्थापना के माध्यम से अहम योगदान भी दिया तथा सोशियोलॉजिकल सोसाइटी के अध्यक्ष पद पर कार्य करते हुए समाजशास्त्र के अनुशासनात्मक विकास में अहम योगदान भी

दिया । इस शोध पत्र में उनके द्वारा समाज एवं परंपराओं के आधुनिकरण में उनके प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है ।साथ ही उनका यह भी मानना है कि समाज में व्याप्त असमानता के प्रति दुर्बल वर्ग में शैक्षिक वैश्वीकरण एवं उदारीकरण के माध्यम से जागरूकता आएगी जिसके फलस्वरूप शीघ्र ही इस असमानता की स्थिति में परिवर्तन होगा । अतः अंत में यह कहा जा सकता है कि भारत में असमानता को निर्मूल समाप्त करने हेतु सरकार समाज के कल्याण के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को लागू करे, जिसके माध्यम से दुर्बल वर्गों को राजनैतिक ,सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सके।

सन्दर्भ

1. **https://www.firstpost.com/india/a-critical-tribute-to-sociologist-yogendra-singh-1932-2020-as-a-teacher-and-his-thoughts-as-a-scholar-8389141.html**
2. **https://www.sociologygroup.com/yogendra-singh-biography-contribution/**
3. **https://en.m.wikipedia.org/wiki/Yogendra_Singh**
4. **https://www.researchgate.net/publication/347838591_Yogendra_Singh_Remembering_the_Sociologist_1932-2020**
5. **https://www.yourarticlelibrary.com/essay/yogendra-singh-contribution-towards-indian-society-and-traditions/39863#:~:text=Yogendra%20Singh%20Contribution%20Towards%20Indian%20Society%20and%20Traditions!,%2C%20Hindu%2C%20Muslim%20and%20tribal.**
6. **https://www.sociologygroup.com/modernization-indian-traditions-yogendra-singh-summary/**
7. **Singh, Yogender.(2006). Modernization of Indian Tradition.Rawat Publications.**
8. **Singh, Yogender.(2000). Cultural Change in India.Rawat Publications.**